

DPN 5438

Title : त्रैलोक्य विजय भैरव कवच

Run. No. 6129

Cat. No. 163

Micro. No.

Subject कवच स्तोत्र Hymn

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 30.8 x 11.5

Folios

3
(9-11)

Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / One side yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / Left hand side edges corners

Beginning, colophon, post-colophon :

अथ भैरवी कवचं ॥ देव्युवाच ॥ भैरवाः सखला विशा, श्रुता चाधीयता मया ॥
संपन्नं श्रोतुमिदमि, कवचं युगं सुरोदितं ॥ त्रैलोक्य विजयं नामः सस्त्रास्त्र विनिर्वाणं ॥
Coloph - इति श्री हनुमानले देवीश्वर संवादे त्रैलोक्य विजयं नाम भैरवी कवचं समाप्तं ॥

१६३ त्रैलोक्यविनायकैश्वर्यवच

[illegible]

४ सर्ग वीर नया लका ॥ वालि पा म गि न पा उ विन्द नाद ग ता यि सा ॥ शाल पा उ क मा नी सा ॥ सर्ग ही ना क मा नी
 का ॥ ह सो पा उ व वा ग्वी र्ज क नू यु ग म सदा व ड ॥ का म वी र्ज सदा या उ या नो यु ग म सदा व ड ॥ ह म क र्ण ह स क ल नी स्त
 ॥ धो पा उ ह मी ४ ४ ३ ॥ य व सी रु न वी पा उ क नो रु सदा व ड ॥ ह द र्प ह स क र्ण व क ४ पा उ ह सो ४ ह नो ॥ पा उ म रु न वी
 द वी च त न्य पि नी म म ॥ ह म पा उ सदा या ॥ ध्व यु र्म ह स क ल नी सदा ॥ क र्ण पा उ ह सो म र्थ रु न वी उ वि द र्श ना ॥ ७ ॥
 ३ म र्थ द र्श वी र वि द्या सदा व ड ॥ ह स र्प ह सदा पा उ ना र्ज ह स क ल नी सदा ॥ पा उ ह सो ४ क टी द र्श र्ण क र्ण रु न
 वी म म ॥ ह स न र्ण खि ती पा उ ह स क ल नी सदा व ड ॥ गु ञ्ज द र्श ह स पा उ जा नू नी रु न वी म म ॥ स प नू य दा सदा पा
 उ रु र्ज ह स क ली य द ॥ पा उ ह सो ४ स र्व द र्श रु न वी स र्व दा व ड ॥ ह स म म व ड पा र्थ ह स क ली पा उ क व ड ॥ १ ॥
 म द र्शि ल पा उ रु न वी च क र्ण स्ति ता ॥ नी क र्ण मी सदा पा उ न म र्था च क रु न वी ॥ ह स ल क नी ह सो ४ प र्श्वि त पा

श्री २

उ रु न वी ॥ की की की पा उ वा य द र्श र्ण पा उ द र्श ना उ न ॥ ह र्ण पा उ स द र्श म न्यी द र्शि कालि क व ड ॥ उ र्ध्व पा गु क
 वी जा नि न रु नु मा म ध ४ ह ल ॥ द्वि वि दि र्श र्ण पा उ कालि का ख ङ्ग धा नि नी ॥ उ र्ध्व मी उ र्ध्व ह र्ण र्ण सा ता ना स र्व र्ण
 मी सदा व ड ॥ स र्ग म का न न र्ण गे ना य त र्ज ह स न ॥ ख ङ्ग क र्ण ध ना सा य सदा मी प नि न रु ड ॥ ७ ॥ नि र्ण क थि त
 द वि सा ना सा न न न ॥ गे ला क वि र्ज य ना म क व र्ण य न मा रु र्ण ॥ य ४ पा ० नू य य ना रु ला पू ज या ४ रु ल
 मा नू या नू स्य र्ण मू य रु व न ल क र्ण वी नी व स रु न ॥ ग रु र्ण ना न रु का न नो वा सी ना व न वा सु लि लाल
 भ वा ॥ वा दे स रा यी प्र ति वा दि ना वा ना रु य का रु र्ण स क ला द ॥ प्र व उ व रु ह म ना न रु नी ना गु ना ४ य का
 पा द पि रु रु मा र्थ ॥ अ य र्ध द र्श य प ० रु र्ण स र्था ना रु न प्र ति मा रु यी च ॥ गे ला क वि र्ज य ना म क व
 व म मू र्वा दि न ॥ वि लि ख रु र्ण रु लि का ख रु र्ण धा न य र्ध दि क ० वा द र्शि वा द र्शि गे ला क वि र्ज यी रु

वत॥ तमां प्रपद्यमाना निरुवन्ति कस्य मातिव। लक्ष्मीः सनस्तर्गितस्य निवसतुवनसुख॥ ७॥ नक्तवव
 मन्त्रोत्ताधारवर्द्धनवीं यवां वालां वा प्रजयद्विधां दनिधामृत्युमायुयात॥ ॥०॥ तिथी नृपजामसदः
 वीध्वनसंवादेला कविजयनामरुनवीकवर्धसमाय॥ ॥७॥ ॥ अथरुनवीकां॥ सुखानयाः
 लाजिपुत्रभाधरीरुलाफथाययावृजनिर्गालक्ष्मीमनूजाः सूनपूजिता॥ वृक्षादयमुत्तिगतेन
 पितृक्षीनृपां ज्ञाननिनवजगदादिमनादिमूर्तिं तस्मादयंकवनतां नवकंकमारां सुसाधुमः सक
 लवाद्यारुरुगां॥ ॥१॥ सद्यसमृद्धतसहस्रदिवाकलाशविद्याकसुप्रवदारयविह्वलसी। नृपाः
 त्यलेक्षिरुनलकनवकुयप्रां लीता नलानवविनाजियेवरुजामि॥२॥ सिद्धनयननृविनैकवरा
 ननमं रत्नाकनषकतपूष्यरुलेकगम्य। श्रुत्यात्यरुदकललाकलमानसैः सौ ज्ञाननिकिञ्जुधियः

प्री०

पार्श्वपूजार्थं सुखीकनासिजगतामिति वयुवा दशसर्गं तदपि तनयजगदकमातर्नोवदलषजगतां सु
 ति नवनस्यात॥ ॥०॥ पूजां विधाय कस्य मेऽसूनयादयानां प्री० तवास्तु कनकावलंगनं नृपायनि
 सिद्धिवनिताः सहस्रकिन्नरीतिना स्वादिता सवनसानूषनययद्वा॥ ॥१०॥ विद्यद्विलासवयस्यः श्रिय
 मूर्धरुकी सुवासयानिरुवनाद्विवनाजानां। सोमसूवतकमलानिविकानयनीं देवीरुजद्विद्यनाः
 मृगसिक्कागर्भा॥ ॥११॥ श्रानन्तरुत्तरुवनैरुवनैर्गुतीनां वनव्यमाणनृमन्त्रवाधयामि॥ वृक्षगविः
 श्रुतिनृपामितयादययां सोराग्यरुत्तरुवनैः श्रियनयथावत्॥ ॥१२॥ गद्याथरावरुवनैः सृजनां दूनूया
 यातद्विरुक्षिपूननकननृः खगल॥ वृक्षात्मिकारुनतितस्य कलयुगमर्गा सावर्दा मनसि जातुनः
 विस्मानामि॥ ॥१३॥ नात्रायनीतिननकाध्वता निधीति। मीनीतिखदलमनीति सनस्तर्गिता। क्लानप्रद
 तिनयनयुयस्यमिति। त्वामदिनाजननयवकधोरुजकि॥ ॥१४॥ अस्तुवन्ति जगन्मागः (स्मृतेर्वदिनारिः ४ कुमातः। त्वामस्य प्राय
 वाकसिद्धिं प्राप्नुयस्वपतंगमि॥ ॥१५॥ ॥०॥ तिथीरुनयाः सुखः समाक॥ ॥

प्री०

सुवचयमम् ॥ ३ ॥ सुलीवदन्ति मूनय ४ धूतया गृहानि सुक्रीवदन्ति ववसा मधिवासमन्या लीमूल
 माकनयनं जगतां शिवानि मन्यामहे वयमया न कुर्यान्मूर्ति ॥ ४ ॥ वडावर्तं सकलितानि नदिनृशु
 र्ग्यं यं वा दशकनमयां रुदिता वया मि लीयुर्कृक जयवती ममृताद्य कुरं याख्या करुसक कमलैर्दः
 धनीं तिनर्ग ॥ ५ ॥ ममुस्त्वमदिननया कलितोद्देशां विष्णुस्त्वमस्व कमलाय विवर्द्धय देह ४ यद्वा
 रुवस्त्वमसि बागधिवारु मि सुखा क्रियाध्यजगति त्रियुत्रत्वमेव ॥ ६ ॥ आश्रित्य वागुवां व्यगुव ४ य
 नादीन लावानु यदष्ट विहितान समुदीनयन्ती । कं ८ अदिशिव कनले ४ यनदवता ली सन्निभमयी
 रुदिके दोयिनं स्मना मि ॥ ७ ॥ आ कं यवायु मवजित्यवव विषक मालाक निव्य लधिया निजना सि
 काय । अयन्ति मूर्द्धि कलितन्दू कलावतर्ग लङ्घय मस्व कतिन सुनू अर्क मितं ॥ ८ ॥ लयाय मन्मथनि

वि२